केन्द्र संख्या की मुहर	केन्द्र व्यवस्थापक के हस्ताक्षर
0090 INTER	

नोट—केन्द्र के नाम की मुहर उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग पर न लगाएं।

नोट—परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग में अपना नाम व केन्द्र का नाम न लिखें।

'ब' उत्तरपुस्तिका की संख्या—	ब1	ब2	ब3	ब4
हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक—				

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायेगा—

अनुक्रमांक (अंकों में)— [illegible]

अनुक्रमांक (शब्दों में)— [illegible]

विषय— अर्थशास्त्र

प्रश्नपत्र संकेतांक— 412 [ISR]

परीक्षा का दिन— गुरुवार

परीक्षा तिथि— 14-03-24

कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाय—

केन्द्र संख्या— [illegible]

परीक्षा कक्ष संख्या— 15

उपरोक्त सभी प्रविष्टियों की जाँच मेरे द्वारा सावधानीपूर्वक कर ली गयी है।

कक्ष निरीक्षक का नाम— Kuldeep Singh

दिनांक— 14/03/2024

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक— Kulty

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन समुचित प्रश्न-पत्र संकेतांक तथा मूल्यांकन निर्देशों के अनुसार किया है। प्राप्तांकों का मुखपृष्ठ पर अग्रसारण कर प्राप्तांकों एवं प्राप्तांकों के योग का मिलान कर लिया गया है। एवार्ड ब्लैंक में प्राप्तांकों की अंकना कर उनका पुनः मिलान भी कर लिया है। किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए मैं उत्तरदायी रहूँगा/रहूँगी।

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या........ 242203

1. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या........

2. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या........

सन्निरीक्षा प्रयोगार्थ

सन्निरीक्षा पूर्व अंक— NC

सन्निरीक्षा पश्चात् अंक— [illegible] 23.04.24

त्रुटि का प्रकार—

दिनांक—

हस्ताक्षर निरीक्षक—

परीक्षक, निम्न तालिका में प्रत्येक प्रश्न तथा उसके खण्डों के प्राप्तांकों का विवरण यथास्थान भरें।

प्रश्न संख्या	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	योग
01											
02											
03											
04											
05											
06											
07											
08											
09											
10											
11											
12											
13											
14											
15											
16											
17											
18											
19											
20											
21											
22											
23											
24											
25											
26											
27											
28											
29											
30											
31											
32											
33											
34											
35											

योग (शब्दों में)........ [illegible] .... योग (अंकों में) [illegible]

उत्तर - 1

उत्तर - (क)

उपयोगिता

उत्तर - (ख)

ये सभी

उत्तर - (ग)

स्थानापन्न वस्तुएँ

उत्तर - (घ)

U आकार का

उत्तर - (ङ)

A सही है परन्तु R गलत है।

परम्परागत रूप से अर्थशास्त्र की विषय वस्तु का अध्ययन दो व्यापक शाखाओं के अन्तर्गत किया जाता है ⟶

1. व्यष्टि अर्थशास्त्र के अन्तर्गत।
2. समष्टि अर्थशास्त्र के अन्तर्गत।

उत्तर - 3

उपभोक्ता की आय में वृद्धि होने से निम्नस्तरीय वस्तु की माँग पर ऋणात्मक प्रभाव पड़ता है कि वस्तु की माँग घट जाती है।

उत्तर - 4

औसत उत्पाद वक्र की आकृति उल्टे U आकार की होती है।

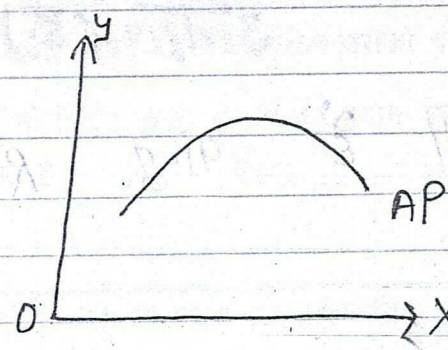

केन्द्रीकृत योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था :→

केन्द्रीकृत योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था वह अर्थव्यवस्था है जिसमे उत्पत्ति के साधनो पर सरकार व समाज का आधिपत्य होता है तथा जनकल्याण की भावना से कार्य किया जाता है।

केन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषता :→

उत्पादन तथा धन का अधिक समान वितरण।

शोषण का अन्त।

उत्तर - 6

पूर्ति की कीमत लोच का अर्थ :→

पूर्ति की कीमत लोच से आशय कीमत मे होने वाले प्रतिशत परिवर्तन का पूर्ति मे होने वाले प्रतिशत परिवर्तन का अनुपात है।

पूर्ति की कीमत लोच = कीमत में प्रतिशत परिवर्तन / पूर्ति में प्रतिशत परिवर्तन

अर्थात्

$$E_s = \frac{\Delta P}{\Delta Q} \times \frac{Q}{P}$$

उत्तर - 7 -

अल्पकाल से आशय :→ अल्पकाल समय की वह अवधि है जिसमे उत्पादन के कुछ साधन परिवर्तनशील होते है और अन्य सभी साधन स्थिर होते है।

दीर्घकाल से आशय :→ दीर्घकाल समय की वह अवधि है जिसमे उत्पादन के सभी साधन परिवर्तनशील होते है। कोई भी साधन स्थिर नही होता है। दीर्घकाल मे उत्पादन के सभी साधनो की मात्रा को घटाया व बढाया जा सकता है।

कीमत रेखा :→

कीमत रेखा वह रेखा है जो दो वस्तुओं के उन विभिन्न संयोगों को कीमत को प्रदर्शित करती है जिन्हे उपभोक्ता को दी हुई कीमत के आधार पर अपनी सीमित आय को व्यय करके खरीद सकता है।

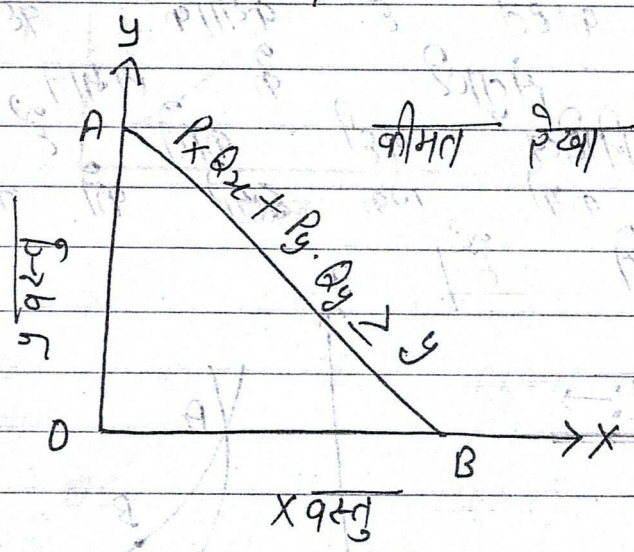

कीमत रेखा

उत्तर - 3

अनधिमान वक्र की विशेषताएँ :→

(1) अनधिमान वक्र मूल बिन्दु के प्रति उन्नतोदर होता है :→ एक अनधिमान वक्र की प्रमुख विशेषता है कि यह मूल बिन्दु के प्रति उन्नतोदर होता है।

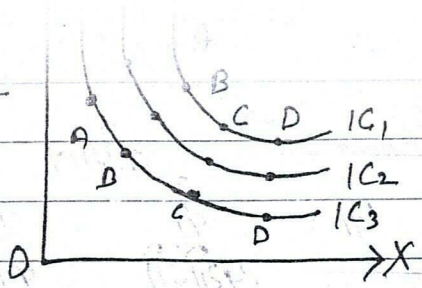

⇒ दो अनधिमान वक्र कभी एक दूसरे को नहीं काटते हैं :→

दो अनधिमान वक्र कभी एक दूसरे को नहीं काटते हैं क्योंकि वह कभी भी संतुष्टि के समान स्तर का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं इसलिए वह कभी एक दूसरे को नहीं काट सकते हैं।

चित्र :→

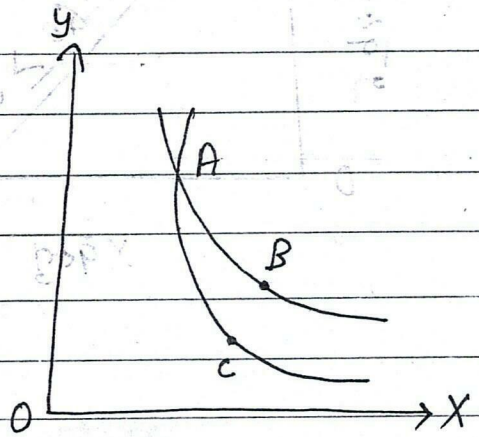

उत्तर - 10

इकाई कर वह कर है जो कर्मी की संख्या में वृद्धि पर लगाया जाता है। इकाई कर लगने से एक कर्मी का प्रति वक्र स्थानांतरित होता है यदि

है तो इकाई कर को बढ़ा दिया जाता है। फलस्वरूप इकाई कर में वृद्धि होने से एक फर्म का पूर्ति वक्र बाईं ओर खिसक जाता है।

चित्र :-

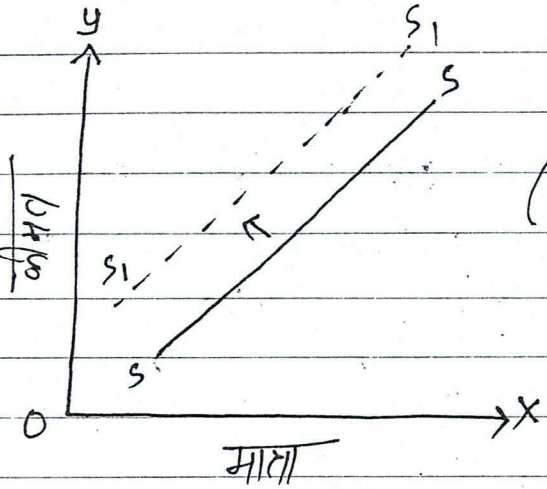

एक फर्म का पूर्ति वक्र (इकाई कर में वृद्धि)

इकाई कर में परिवर्तन तब आता है जब फर्मों की संख्या बाजार में घट या बढ़ जाती है। फर्मों की संख्या बढ़ने से सरकार द्वारा इकाई कर में कटौती कर ली जाती है। फलस्वरूप पूर्ति वक्र दाईं ओर खिसक जाता है।

चित्र :-

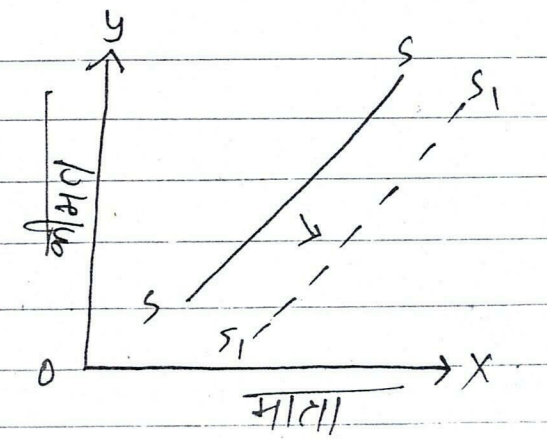

एक फर्म का पूर्ति वक्र (इकाई कर घटने से)

एक फर्म के पूर्ति वक्र पर इकाई कर

का अधिक प्रभाव पड़ता है।

उत्तर - 11

पूर्णतया बेलोचदार माँग :→

पूर्णतया बेलोचदार माँग वह स्थिति है जब किसी वस्तु की कीमत में होने वाले परिवर्तन का उसकी माँग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है उसे पूर्णतया बेलोचदार माँग कहते है। इस स्थिति में माँग की लोच शून्य (0) होती है।

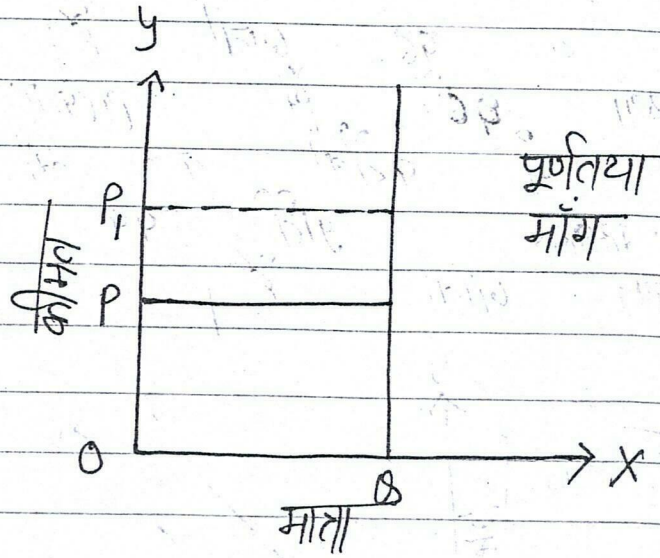

पूर्णतया बेलोचदार माँग वक्र

इस स्थिति में माँग वक्र लम्बवत होता है। तथा कीमत में परिवर्तन होने पर भी माँग में कोई परिवर्तन नहीं

उत्तर -12

माँग वक्र मे शिफ्ट :→

माँग वक्र मे शिफ्ट दो दृष्टिकोणो से होता है :→

(1) माँगी गई मात्रा मे परिवर्तन और

(2) माँग मे परिवर्तन

(1) माँगी गई मात्रा मे परिवर्तन

- माँग का विस्तार → कीमत मे कमी के कारण
- माँग का संकुचन → कीमत मे वृद्धि के कारण

माँग का विस्तार :→

अन्य बातो के समान रहने पर किसी वस्तु की कीमत मे कमी होने पर उसकी माँग मे वृद्धि हो जाती है तो इसे माँग का विस्तार होना कहते है।

कीमत	माँग
5	1
1	5

चित्र :-

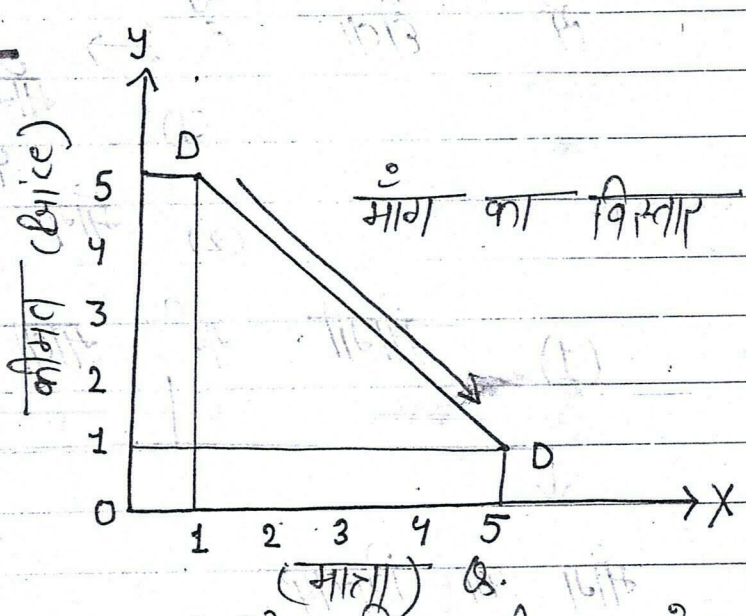

चित्र से स्पष्ट है कि कीमत के कम होने पर माँग का विस्तार हो जाता है।

माँग का संकुचन :→

जब अन्य बातें समान रहने पर किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होने पर उसकी माँग में कमी आती है तो इसे माँग का संकुचन कहते है।

तालिका द्वारा स्पष्टीकरण :-

तालिका : माँग का संकुचन

कीमत	माता
1	5
5	1

चित्र :

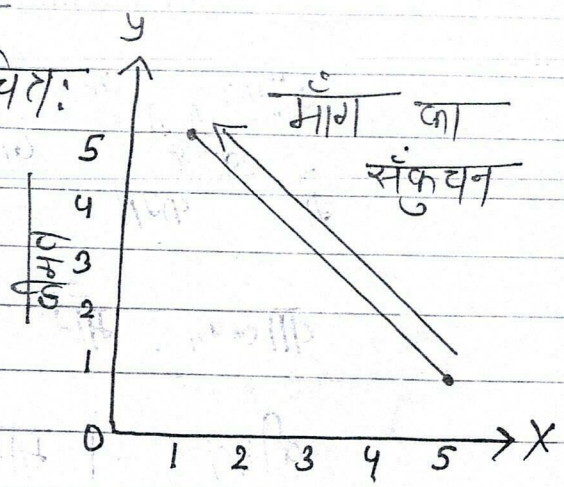

चित्र द्वारा स्पष्ट है कि कीमत के बढ़ने पर माँग का संकुचन हो जाता है।

माँग मे परिवर्तन

माँग मे वृद्धि — माँग मे कमी

माँग मे वृद्धि :→

जब प्रचलित या वर्तमान कीमत पर किसी वस्तु की अधिक मात्रा खरीदी जाती है तो यह माँग मे वृद्धि की स्थिति है।

तालिका : माँग मे वृद्धि

कीमत	माता
10	10
10	20

चित्र :

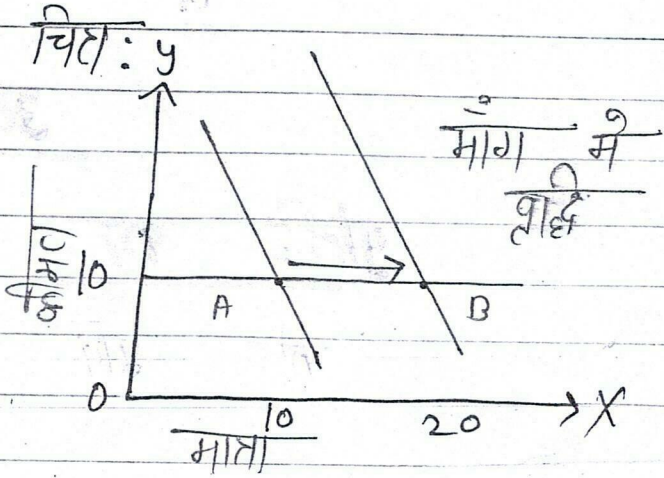

कीमत पर किसी वस्तु की कम मात्रा में खरीदी जाती है तो यह माँग में कमी की स्थिति है।

तालिका : माँग में कमी

कीमत	मात्रा
10	30
10	20

चित्र :→

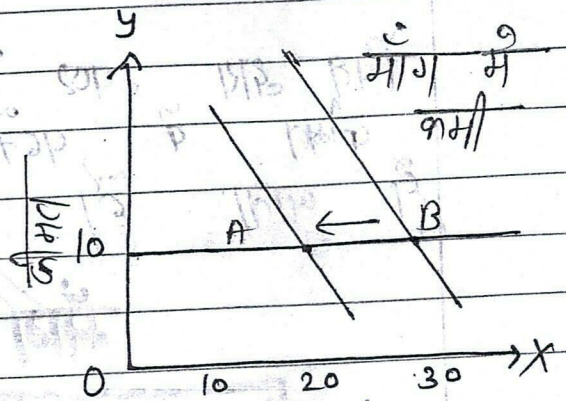

माँग में वृद्धि अथवा कमी → कीमत के अतिरिक्त अन्य तत्वों के परिवर्तन के कारण होती है।
जैसे → उपभोक्ता की आय, रुचि जनसंख्या परिवर्तन आदि के द्वारा।

उत्तर - 13

पूर्ति का अर्थ :→ किसी वस्तु की पूर्ति वह मात्रा है, जो

मे विक्रेताओं के पास बेचने के लिए उपलब्ध होती है।

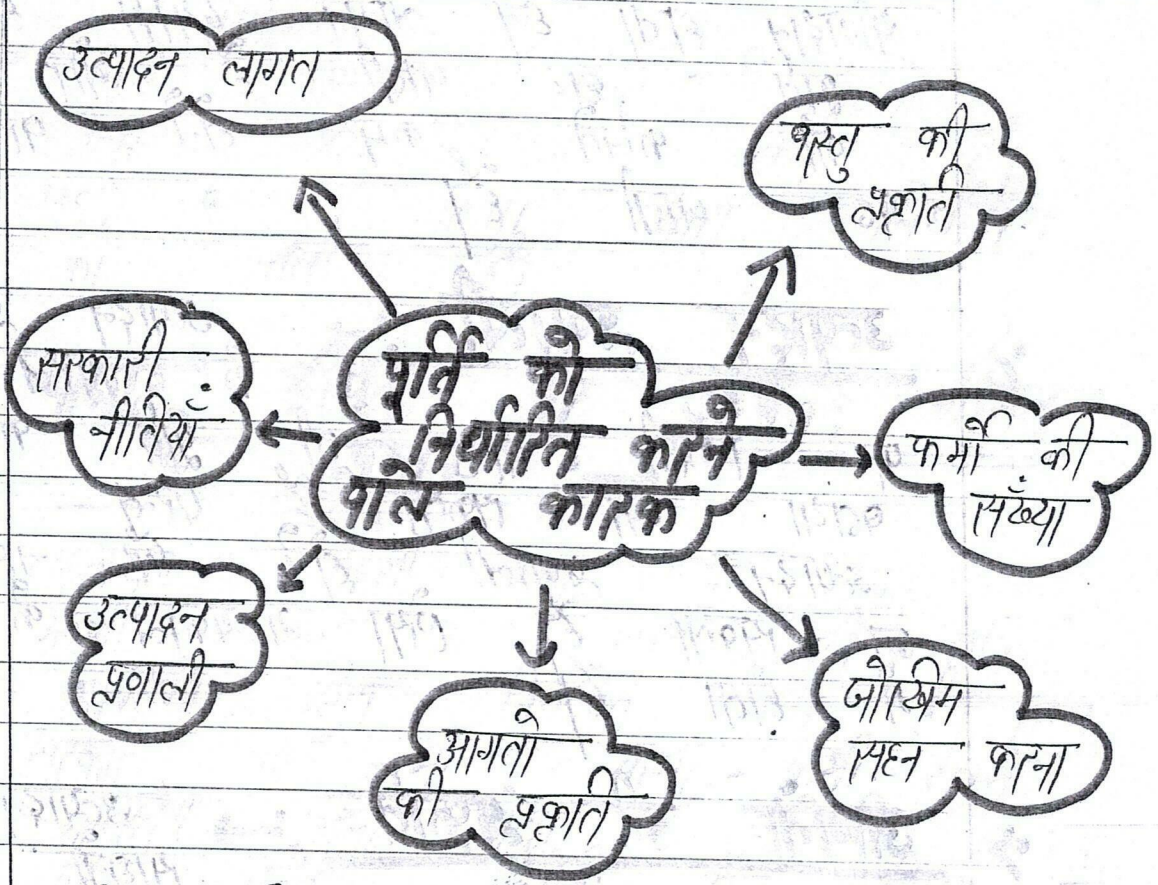

कीमत की खोज निम्नलिखित तत्व निर्धारित करने मे सहायक होते है :→

• वस्तु की प्रकृति :→ किसी वस्तु की कीमत को निर्धारित करने वाला महत्त्वपूर्ण कारक वस्तुओं की प्रकृति है। टिकाऊ वस्तुओं की कीमत की माँग ज्यादा होने पर पूरी करदी जाती है। परन्तु नाशवान वस्तुओं की माँग अल्पकाल मे तुरन्त पूरी नही की जा

सकता है।

उत्पादन लागत :→ उत्पादन की लागत का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। लागत ज्यादा होने पर पूर्ति घट जाती है और साधनों की कीमतें कम होने पर पूर्ति बढ़ जाती है।

उत्पादन प्रणाली :→ उत्पादन प्रणाली के सरल होने पर किसी वस्तु की पूर्ति को बढ़ाया जा सकता है परन्तु कठिन उत्पादन प्रणाली होने पर नहीं बढ़ाया जा सकता है। ऐसा अल्पकाल के समय में होता है।

आगतों की प्रकृति :→ उत्पादन के साधनों का भी पूर्ति को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण कारक होता है। परिवर्तनशील साधनों की मदद से पूर्ति को बढ़ाया जा सकता है।

सरकारी नीतियाँ :→ पूर्ति को निर्धारित करने में सरकारी नीतियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सरकार करों में कमी अथवा वृद्धि से पूर्ति को प्रभावित करती है।

उत्तर - 14

उच्चतम कीमत :→

उच्चतम कीमत से अभिप्राय उस कीमत से है जिसे उत्पादक अपने साधनों को बेचकर प्राप्त कर सकते है यह कीमत सरकार द्वारा निर्धारित की जाती है।

बाजार कीमत पर उच्चतम कीमत के प्रभाव :→

सामान्यत: किसी वस्तु की बाजार कीमत उसकी मांग में वृद्धि की सापेक्षित शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है। परन्तु सरकार को भी कभी-कभी इसमें हस्तक्षेप करना होता है क्योंकि सरकार पर गरीबी लोगों के हितों की जिम्मेदारी होती है।

सरकार को किसानों को उनकी न्यूनतम आय सुनिश्चित कराने के लिए कीमत में हस्तक्षेप करना पड़ता है। इसके लिए वह दो युक्ति अपनाती है → (1) उच्चतम कीमत और (2) न्यूनतम कीमत

उच्चतम कीमत का प्रमुख प्रभाव →

•) इससे सरकार किसानो या विक्रेताओ को उनकी सुनिश्चित आय देने की कोशिश करती है।

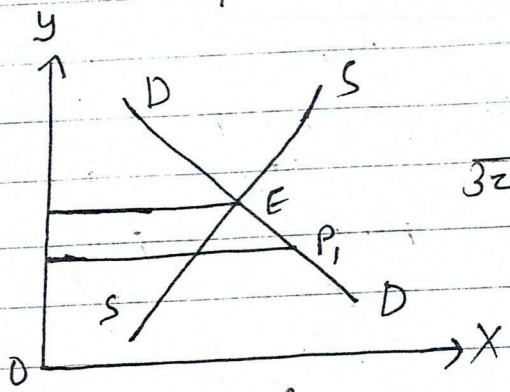

•) यदि विक्रेताओ को उनकी उच्चतम कीमत प्राप्त नही होती तो इससे वस्तुओ उच्चतम कीमत पर काले बाजारो मे बिकने लगती है जिसके बुरा प्रभाव पड़ता है।

खण्ड - ब (Section - B)

उत्तर - 15

उत्तर - (क)

एडम स्मिथ

उत्तर - (ख)

रैपो रेट

उत्तर - (ग)

कीन्स

उत्तर - (घ)

निवेश

उत्तर - (ङ)

A तथा R दोनों सही है तथा R, A की सही व्याख्या करता है।

उत्तर - 16

मुद्रा के माध्यम के बिना वस्तुओं के विनिमय को वस्तु विनिमय प्रणाली कहते हैं।

P.T.O

सीमांत उपभोग प्रवृत्ति का अधिकतम मान 1 हो सकता है।

उत्तर - 18

जी. एस. टी. (GST) का पूरा नाम वस्तु एवं सेवा कर (Goods and Service Tax) है।

उत्तर - 19

कागजी मुद्रा के लाभ :→

(1) किसी भी अन्य वस्तु की तुलना में अधिक टिकाऊ होती है।

(2) कागजी मुद्रा का वजन बहुत कम होने के कारण इसे आसानी से साथ में रख सकते हैं।

उत्तर - 20

~~निवे~~ **निवेश गुणक का अर्थ :→**

निवेश गुणक निवेश में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप आय में होने वाले परिवर्तन का अनुपात है। आय में वृद्धि होने पर निवेश गुणक में भी वृद्धि होती है। इसके विपरीत आय में कमी होने पर निवेश गुणक में कमी हो जाती है इसीलिए कहा गया है कि "निवेश गुणक दोधारी तलवार है।"

निवेश गुणक का सूत्र,

$$\text{गुणक } K = \frac{\Delta I}{\Delta y}$$

यहाँ, K = गुणक
ΔI = निवेश में परिवर्तन
Δy = आय में परिवर्तन

उत्तर - 21

सीमांत बचत प्रवृत्ति :→ सीमांत बचत प्रवृत्ति आय में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप बचत में होने वाले परिवर्तन का अनुपात है।

सीमांत बचत प्रवृत्ति = बचत में परिवर्तन / आय में परिवर्तन

$$MPS = \frac{\Delta S}{\Delta Y}$$

उत्तर - 22

व्यापार में संतुलन तथा अदायगी संतुलन में अंतर :→

व्यापार संतुलन का अर्थ :→ किसी निश्चित में एक देश द्वारा किए गए आयात तथा निर्यात के अन्तर को व्यापार संतुलन कहते हैं। व्यापार संतुलन में इश्य मदों को सम्मिलित किया जाता है। यह भुगतान संतुलन का एक अंग होता है।

व्यापार संतुलन = निर्यात - आयात

अदायगी संतुलन का अर्थ → अदायगी संतुलन वह संतुलन है जो चालू खाते के एक घटक के रूप में

नोट–केन्द्र के नाम की मुहर उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग पर न लगाएं।

नोट–परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग में अपना नाम व केन्द्र का नाम न लिखें।

परीक्षार्थी द्वारा भरा जाय–

अनुक्रमांक (अंकों में)–

अनुक्रमांक (शब्दों में)

विषय अर्थशास्त्र

प्रश्नपत्र संकेतांक– 412 [ISR]

कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाय–

केन्द्र संख्या– 0090

परीक्षा कक्ष संख्या– 15

(उपरोक्त सभी प्रविष्टियों की जाँच मेरे द्वारा सावधानीपूर्वक कर ली गई है।)

कक्ष निरीक्षक का नाम Kuldeep Singh

दिनांक– 14/03/24

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक– Kuldeep

परीक्षक के हस्ताक्षर व संख्या .....

पी0एस0यू0 (आर0ई0) 17 उ0वि0शि0प0/36–14–06–2023–2,11,000 उत्तर पुस्तिकाएं (कम्प्यूटर/ऑफसेट)।

है। अदायगी संतुलन चालू खाते के घाटक के रूप में है।

उत्तर - 23

स्टॉक का अर्थ → स्टॉक समय के एक निश्चित बिंदु पर मापे जाने वाली मात्रा है। जैसे → Jan 1, 2009 को आपके खाते में 1000 रुपये है और Jan 10, 2009 को आपके बैंक खाते में 5000 रुपये है। यह मात्रा स्टॉक है। स्टॉक का संबंध समय के एक निश्चित बिन्दु से होता है।

प्रवाह का अर्थ :→ प्रवाह समय की एक निश्चित अवधि में मापे जाने वाली मात्रा को कहते है। जैसे → आपका 1 महीने का खर्च 100 रु है या आप प्रतिदिन 50 रुपये खर्च करते है। यह समय की एक अवधि में मापी जाने वाली मात्रा है। इस संबंध समय की एक अवधि से होता है।

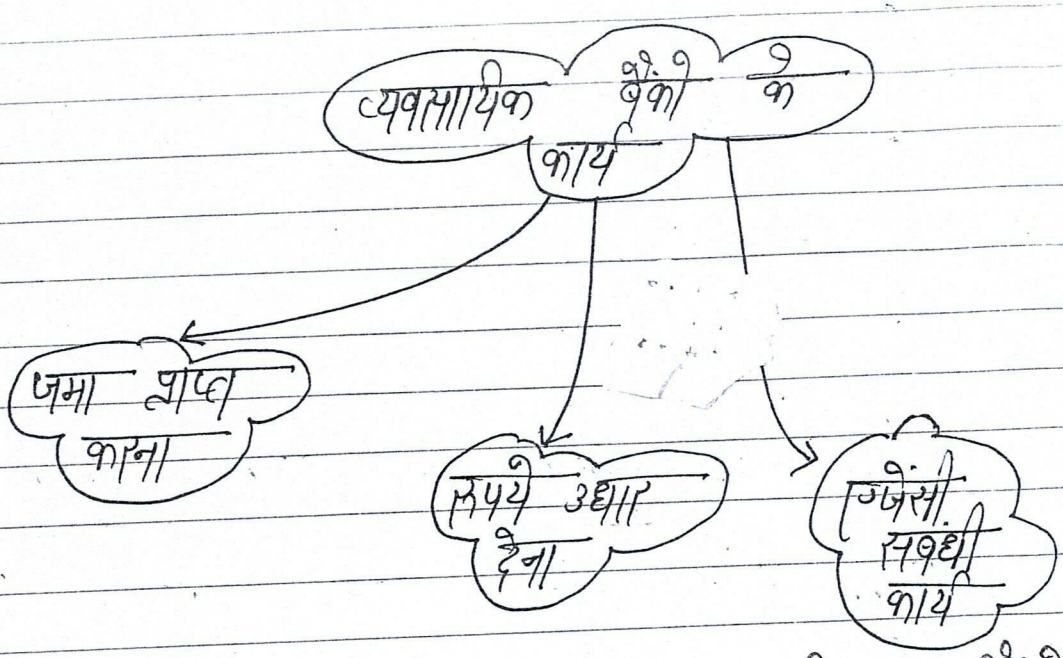

1. **जमा प्राप्त करना** → व्यवसायिक बैंको का प्रमुख कार्य जनता के द्वारा जमा किए गए रुपयों को रखना है। वह जनता से रुपया जमा के रूप में प्राप्त करते हैं और जरूरत पड़ने पर देते हैं।

2. **रुपया उधार देना** :→ व्यवसायिक बैंकों का प्रमुख कार्य जनता को जरूरत पड़ने पर रुपया उधार देना है। यह बैंक ब्याज की न्यूनतम दर पर जनता को ऋण उपलब्ध कराती है।

3. **धन का हस्तांतरण करना** :→ व्यवसायिक बैंक धन को एक स्थान से दूसरे स्थान पर सुरक्षित प्रेषित कर देते हैं।

स्थिर विनिमय दर → दर वह दर है जो अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा तथा किसी देश की सरकार द्वारा निर्धारित की जाती है। परिवर्तन केवल अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा ही संभव है। इसमें एक देश के स्वर्ण को आधार मानकर मूल्य निर्धारित कर दिया जाता है।

स्थिर विनिमय दर के गुण →

- इस विनिमय दर को कोई भी अपने हित के लिए परिवर्तित नहीं कर सकता। यह काफी स्थिर विनिमय दर है।
- एक देश का दूसरे देश की विनिमय
- दर में परिवर्तन करना काफी कठिन होता है।

दोष :→

- इसमें परिवर्तन करना संभव नहीं। केवल अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा ही संभव है।
- यह प्रणाली एक देश की मुद्रा को दूसरे देश की मुद्रा में परिवर्तित करना कठिन।

राष्ट्रीय आय की गणना की निम्नलिखित दो विधियाँ →

आय विधि :→ इस विधि अनुसार राष्ट्रीय आय की गणना करने के लिए एक लेखा वर्ष में उत्पादन के साधनों (भूमि, श्रम, पूंजी, उद्यम) को उनकी पारिश्रमिक के अनुपात : लगान, मजदूरी, वेतन लाभ की गणना करके राष्ट्रीय आय की माप की जाती है।

यह निम्न चरणों में राष्ट्रीय आय की माप करती है—

प्रथम चरण → उत्पादक क्षेत्र की पहचान व वर्गीकरण द्वारा प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक क्षेत्र व तृतीयक क्षेत्र की गणना की जाती है।

- **द्वितीय चरण :→** इन क्षेत्रों की गणना करने के बाद इनमें से मूल्य ह्रास व शुद्ध प्रत्यक्ष कर को घटा दिया जाता है।
- **तृतीय चरण में :→** इन क्षेत्रों में विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय को जोड़ दिया जाता है।

मे राष्ट्रीय आय की माप करता है :-

°) **प्रथम चरण** :→ उत्पादक क्षेत्रों की पहचान करना और फिर प्राथमिक, द्वितीयक व तृतीयक क्षेत्र के अंतिम उत्पादमूल्य को जोड़ देना।

°) **द्वितीय चरण** :→ साधन आय के घटकों का जोड़ — (1) कर्मचारियों का पारिश्रमिक (2) मिश्रित आय (3) स्वानियोजित आय

°) **तृतीय चरण** :→ इनमें से मूल्य ह्रास को घटा कर शुद्ध राष्ट्रीय आय प्राप्त हो जाती है।

यह विधि उपर्युक्त प्रकार से राष्ट्रीय आय की माप करती है।

उत्तर - 27

पूर्ण रोजगार की अवधारणा :→ पूर्ण रोजगार से आशय उस स्थिति से है जिसमे प्रचलित या वर्तमान रोजगार के स्तर पर काम करने के इच्छुक व्यक्तियों को काम मिल रहा हो और अर्थव्यवस्था मे कोई भी व्यक्ति बेरोजगार न हो।

परन्तु यह एक अव्यवहारिक स्थिति है क्योंकि पूर्ण रोजगार के होते हुए भी कोई अर्थव्यवस्था बेरोजगारी से पूरी तरह

इसमे निम्नलिखित दो दृष्टिकोण है

(1) परम्परावादी दृष्टिकोण → परम्परावादी अर्थशास्त्रीयो के अनुसार एक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था मे माँग एंव पूर्ति स्वय एक दूसरे के बराबर हो जाती है। और यह पूर्ण रोजगार के स्थान पर पहुँच जाती है।

जे० बी० से के अनुसार → "पूर्ति अपनी माँग का स्वय निर्माण करती है। [Supply creates its own Demand]"

(2) केन्जीयन दृष्टिकोण :→ केन्ज का विचार परम्परावादी अर्थशास्त्रीयो के विपरीत है। केन्ज के अनुसार पूर्ण रोजगार के होने पर भी अर्थव्यवस्था मे कुछ बेरोजगारी पायी जाती है। अत. अर्थव्यवस्था मे माँग एंव पूर्ति के निर्धारित होने के साथ - साथ सरकारी हस्तक्षेप भी चलती है।

चित्र द्वारा विश्लेषण :→

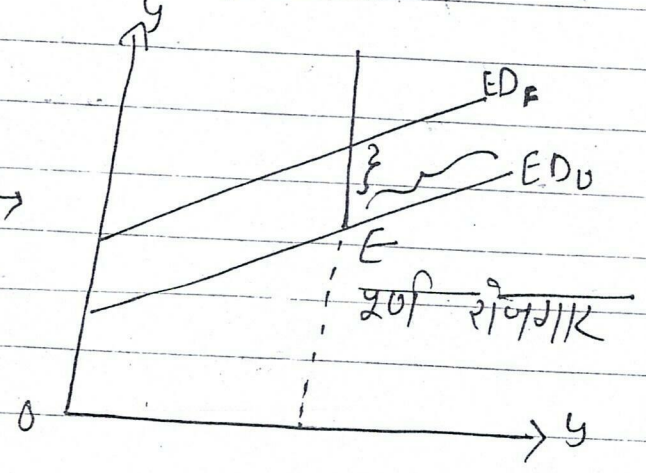

पूर्ण रोजगार (E) के बेरोजगार होने की कुछ व्यक्तियों
प्रणाली पायी जाती है।
ऐसा इसलिए कि व्यक्ति का एक काम से दूसरे काम को ढूंढने में लगने वाला समय व आधारिक सूचना के कारण भी होता है।

उत्तर - 28

उत्तर - (i)

कुल व्यय और कुल प्राप्तियों के अन्तर को राजकोषीय घाटा कहा जाता है।

उत्तर - (ii)

प्रभावी पूँजीगत व्यय का अर्थ → पूँजीगत व्यय और पूँजीगत परिसम्पत्तियों के सृजन सहायता के अनुदान के जोड़ से है।

P.T.O

प्राथमिक घाटे मे, ब्याज अदायगियो को जोड़ने से राजकोषीय घाटे की प्राप्ति होती है।

उत्तर - (iv)

वित्तीय वर्ष 2021-22 का कुल वास्तविक व्यय 37, 93, 801 करोड़ रुपये है।

Rough

41, 87, 232	41, 87, 232
- 3 93 431	3 93 431
37 93 801	37 93 801